

शास्त्री तृतीय सत्रार्द्ध  
पुराणेतिहास  
पत्र संख्या - GE- III  
पाठ्यक्रम विवरणम् -

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

भगवद्भक्तिः।

- मङ्गलाचरणम्।
- ग्रन्थप्रयोजनम्।
- अहैतुकी भक्तिः।
- श्रीवासुदेवस्य भजनीयत्वम्।
- श्रेयोमार्गान्तरस्यापि वासुदेवपरत्वम्।
- मातरं देवहूतिम्प्रति कपिलोक्तिः।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

भक्तिमहत्त्वम्।

- प्रह्लादोपदेशः।
- भक्तिं विना ज्ञानस्यासिद्धत्वम्।
- भागवतधर्मपरिपालनमहत्त्वम्।
- भक्तिं विनान्यसाधनस्य व्यर्थत्वम्।
- भगवद्भक्तेः सर्वश्रेष्ठत्वम्।
- कर्मबन्धनम्।
- सकलपुरुषार्थेभ्यः भक्तेरुत्तमत्वम्।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

सत्सङ्गः।

- सत्सङ्गमहत्त्वम्।
- महत्सेवा।
- सतां लक्षणम्।
- सत्सङ्गफलम्।
- भगवतः भक्तपराधीनत्वम्।
- दर्शनादेव साधवः।
- कर्मसचिवाः देवाः।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

नवधाभक्तिः।

- पितरं प्रति प्रह्लादवचनम्।
- अम्बरीषस्य भगवद्भक्तिः।
- श्रवणकीर्तनादीनां फलम्।
- मनःशुद्धिफलम्।
- श्रवणादीनामसाधारणत्वम्।
- श्रवणादिविमुखस्य देहेन्द्रियादीनां व्यर्थत्वम्।
- भगवत्परकाणां देहेन्द्रियादीनां सार्थकत्वम्।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः -

भक्तिरत्नावली (1-3 विरचनम्) चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

सहायकसन्दर्भग्रन्थाः

श्रीमद्भागवत पुराण में प्रेमतत्त्व, ईष्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

हरिभक्तिरसामृतसिन्धुः, जयकृष्णदासगुप्त, वाराणसी।

माधुर्यभक्ति, न्यु भारतीय बुक् कारपोरेशन, दिल्ली।